दिनांक :- 04-07-2020

कालेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फ़ारुक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम वर्ष (अनुशंगिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- पाँच

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- वैदिक सभ्यता (The Vedic civilization)

आर्कटिक प्रदेश या उत्तरी ध्रुव प्रदेश का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त के प्रतिपादक लोकमान्य बालगंगाधर तिलक है। उन्होंने ऋग्वेद में वर्णित कुछ प्राकृतिक दृश्यों के आधार पर यह प्रमाणित किया कि आर्य मूलतः उत्तरी ध्रुव के निवासी थे। ऋग्वेद एवं अवेस्ता का अध्ययन करने के बाद तिलक इस

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष पर पहुँचे कि आरंभ में उत्तरी ध्रुव प्रदेश के मूल निवासी होते तो ऋग्वेद हिमाच्छादित नहीं था और वहाँ वसन्त ऋतु जैसा सुहावना और मौसम रहता था। कालान्तर में भौगोलिक परिवर्तन के कारण वहाँ भयंकर हिमपात हुआ और आर्यों को अपनी भूमि छोड़नी पड़ी। किंतु मातृभूमि की स्मृति उनके हृदय पर दीर्घकाल तक छाई रही। उन्होंने अपने धर्म ग्रंथों में अपनी मूल भूमि का यत्र-तत्र वर्णन किया है। तिलक का तर्क है कि ऋग्वेद में छः मास की रात्रि और लम्बी उषा का वर्णन है। यह ध्रुव प्रदेश के दिन-रात और उषा का ही हो सकता है। अवेस्ता में एक भयंकर हिमपात का वर्णन मिलता है जो इस बात का प्रमाण है कि उत्तरी ध्रुव प्रदेश में

हिमपात होने पर आर्यों ने अपनी मूल भूमि त्याग दी। किंतु आलोचक तिलक के मत को स्वीकार नहीं करते। उनका तर्क है कि यदि आर्य उत्तरी ध्रुव प्रदेश के मूल निवासी होते हैं तो वे सिंधु प्रदेश को देव कृत चीनि कहकर नहीं पुकारते। आर्यों के साहित्य में उत्तरी ध्रुव का स्पष्ट वर्णन नहीं मिलता है। आर्यों का ज्ञान अपने ही प्रदेश तक सीमित रहा हो, ऐसा स्वीकार कर लेना युक्ति संगत नहीं है। वे अपने भ्रमण मार्ग का भी वर्णन कर सकते हैं। तिलक ने अपने मत की पुष्टि में साहित्यिक प्रमाणों का सहारा लिया है और साहित्य में कल्पना का प्राधान्य रहता है। अतएव अनेक विद्वान ने तिलक की मत को स्वीकार नहीं किया है।

भारत आर्य का मूल निवास-स्थान : पौराणिक प्रमाणों के आधार पर कुछ भारतीय विद्वानों का मत है कि आर्य

भारत के रहने वाले थे, वे कहीं बाहर से यहाँ नहीं आये थे। उनका स्थान निवास मध्यप्रदेश (वर्तमान उत्तरप्रदेश) और बिहार था। आर्यों का मुख्य केन्द्र अयोध्या, प्रतिष्ठानपुर और गया था। यहीं से वे भारत के विभिन्न भागों में गये और उनकी कुछ शाखाँए मध्य तथा पश्चिमी एशिया तक पहुंच गयी इस प्रकार भारत से ही आर्यों ने अपनी संस्कृति का विस्तार अन्य देशों में किया।

भारत को आर्यों का मूल निवास-स्थान मानने वालों में श्री अविनाश चन्द्र दास, श्री गंगानाथ झा श्री डा० श्याम त्रिवेदी डा० राजबली पाण्डेय श्री एल० डी० कल्ला प्रमुख हैं। इनका तर्क है कि वेद में सप्तसिंधु प्रदेश नहीं मिलता है। कि आर्य भारत में बाहर से आये थे यह कैसे सम्भव है

कि कोई जाति अपने साहित्य में अपनी जन्मभूमि का गुणगान नहीं करेगा। ऋग्वेद में जिन भौगोलिक परिस्थितियों और वातावरण का वर्णन है, वह सब भारत के सप्तसिंधु प्रदेश का है। इसके साथ-साथ भारत की सभी भाषाओं में आर्यों की संस्कृत भाषा के शब्दों का बहुल्य है। जबकि यूरोप की भाषाओं में संस्कृत के शब्द अपेक्षाकृत कम है। अतएव भारत ही आर्यों का मूल निवास-स्थान रहा होगा। श्री गंगा नाथ झा भारत के ब्रह्मर्षि देश (पूर्वी राजस्थान गंगा यमुना दोआब, पश्चिमवर्ती प्रदेश) को आर्यों का मूल स्थान मानते हैं। श्री अविनाश चन्द्र दास सिंधु प्रदेश को आर्यों का मूल निवास स्थान मानते हैं। श्री एल० डी० कल्ला ने कश्मीर और हिमालय के पर्वतीय प्रदेश को आर्यों का मूल निवास-स्थान बतलाया है। स्वामी

सरस्वति तिब्बत को आर्यो की जन्म भूमि मानते है। अनेक विद्वान भारत को आर्यो की मूल-भूमि स्वीकार नही करते। उनका तर्क है कि यदि भारत आर्यो का आदि देश था तो आर्यो के भारत से बाहर जाने के पहले ही सम्पूर्ण भारत का आर्यीकरण हो जाना चाहिए था, किंतु ऐसी बात नही है। पुनः सिंधु सभ्यता ऋग्वैदिक सभ्यता से अधिक भिन्न और प्राचीन है। जब सिंधु प्रदेश की यह प्राचीनतम सभ्यता अनार्य थी, तब भारत आर्यो का आदि देश कैसे हो सकता है। आर्यो के आदि देश के सम्बंध मे जितने भी मत अभी तक प्रतिपादित किये गये है उनमे से किसी एक के भी पक्ष मे अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत नही किये गये है। वस्तुतः यह बहुत

Scanned with CamScanner

ही विवादग्रस्त प्रश्न है और अभी इस विषय में बहुत अनुसन्धान की आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में आर्यों के मूल निवास स्थान के विषय में किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचना कठिन है। लेकिन अधिकतर विद्वान इस मत के साथ है कि आर्य मध्य एशिया के क्षेत्र से आकर भारतवर्ष में बसे थे। भारत में आर्यों का आगमन 1500 ई० पू० के कुछ पहले हुआ था। प्रारंभिक आर्यों का निवास पूर्वी अफगानिस्तान एवं पंजाब था। ऋग्वेद में सिंधु तथा इसकी पाँच सहायक नदियों गोतमी, आधुनिक खुर्रम तथा आधुनिक काबुल का उल्लेख है। काबुल के उत्तर में सबसे महत्वपूर्ण नदी सुवस्तु (स्वात) का भी उल्लेख मिलता है। इससे पता चलता है कि स्वात की घाटी में आर्यों की बस्तियाँ थी।

Scanned with CamScanner